सम्प्रदाय

इष्टदेवके नाममन्त्रकी दीक्षाके दानपूर्वक गुरु–शिष्यकी प्रणालीसे चली आती धर्मसाधनाकी विशिष्ट परम्परा.

वैदिक धर्म और सम्प्रदाय

- वृक्ष और शाखा

- प्राथमिक सामान्य शिक्षा और उच्च विशिष्ट शिक्षा

सम्प्रदायके घटक

१. प्रमाण–शास्त्र

२. उपास्य

३. आचार्यपरम्परा

४. दीक्षाप्रणाली

५. साधनाप्रणाली

६. सिद्धान्त

- १. धर्म
- २. तत्त्व

सम्प्रदायके प्रकार

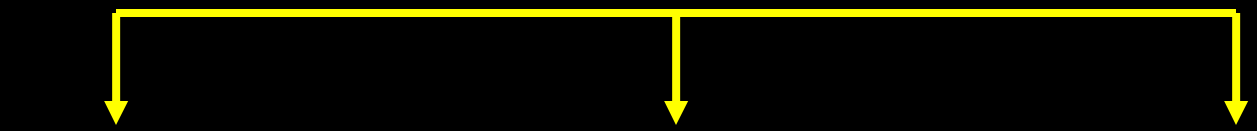

पुष्टिभक्तिसम्प्रदाय

भक्तिशास्त्र भागवतका अर्थ प्रकट करनेमें समर्थ इस लोकमें वाणीके पति वैश्वानर श्रीकृष्णके अलावा ओर कोई नहीं है यह देखकर भगवानने, जैसे व्यासजीको वेदोंका विभाजन और पुराणोंको प्रकट करनेकी आज्ञा दी थी, उसी तरह मुझको मनुष्यदेहमें प्रकट होकर भागवतका गूढार्थ प्रकट करनेकी आज्ञा दी. (‘सुबोधिनी’का मंगलाचरण)

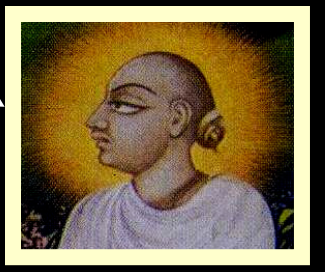

एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतम्

एको देवो देवकीपुत्रएव

मन्त्रोप्येकस्तस्य नामानि यानि

कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा

तत्त्वार्थदीपनिबन्ध–शास्त्रार्थप्रकरण

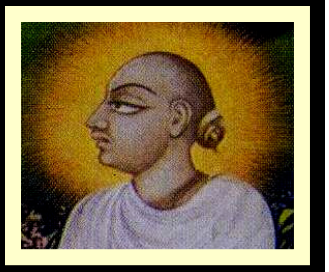

श्रावणस्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि,

साक्षाद् भगवता प्रोक्तं तदक्षरश उच्यते

सिद्धान्तरहस्य

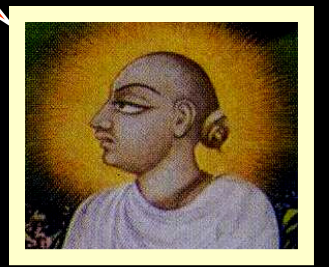

२. उपास्य

परब्रह्म

परमात्मा

भगवान्

अवतारी

स्वसेव्य

३. आचार्यपरम्परा

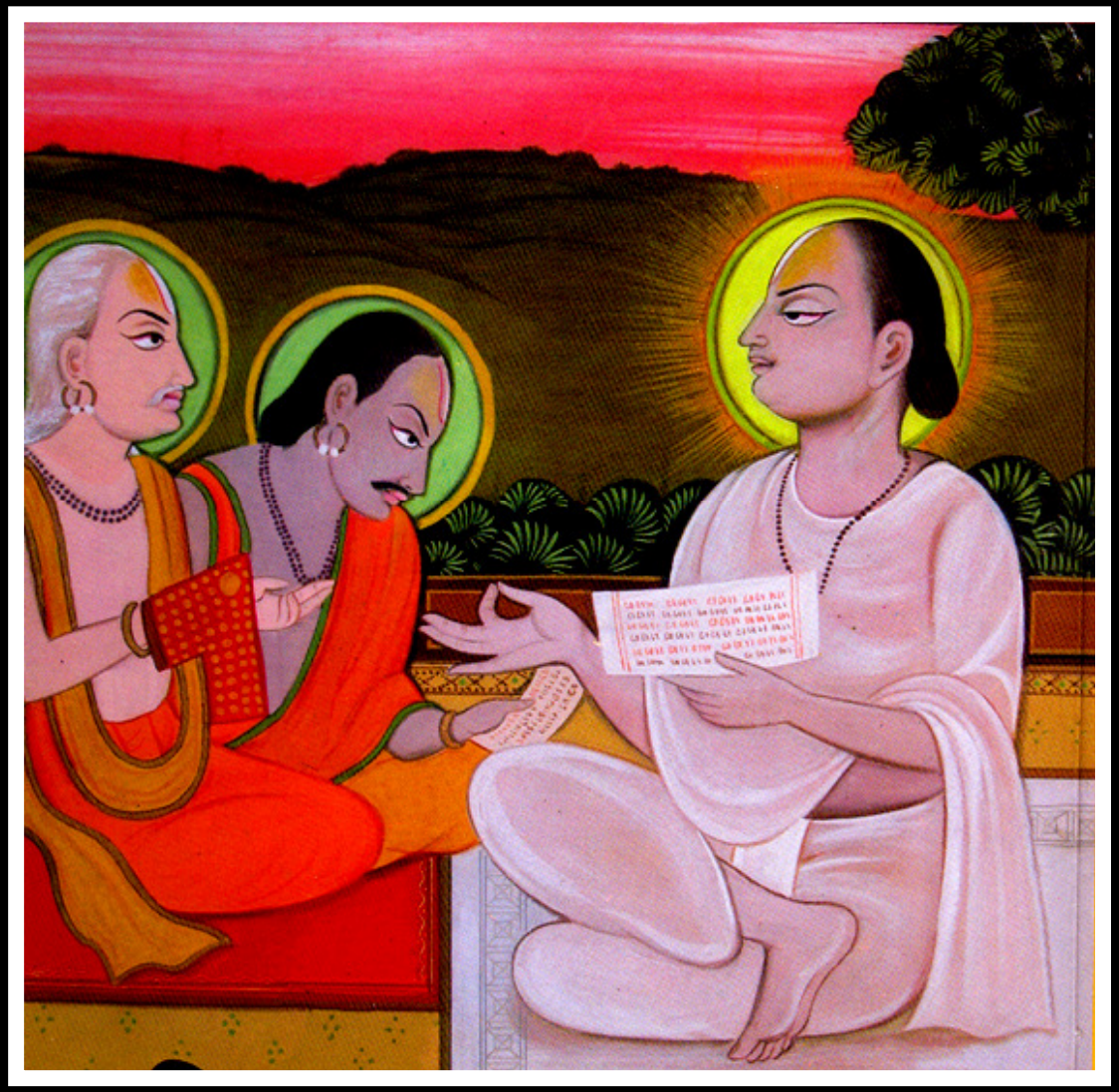

सम्प्रदायप्रवर्तक आचार्यत्रयी

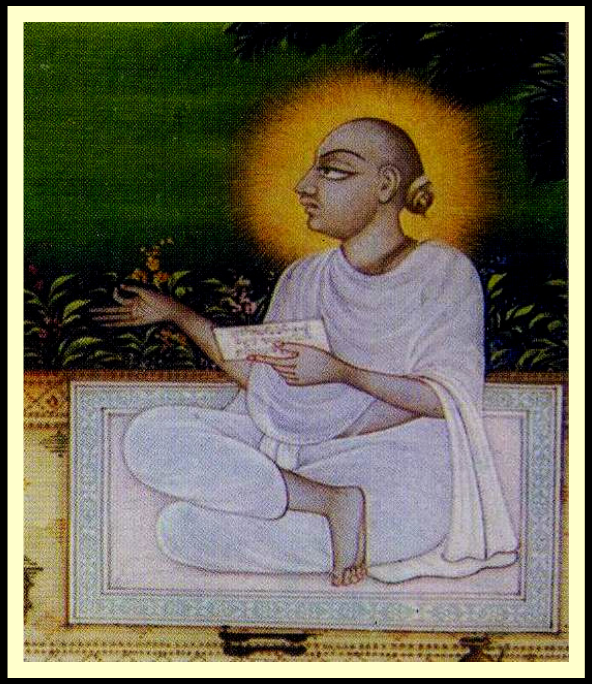

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य

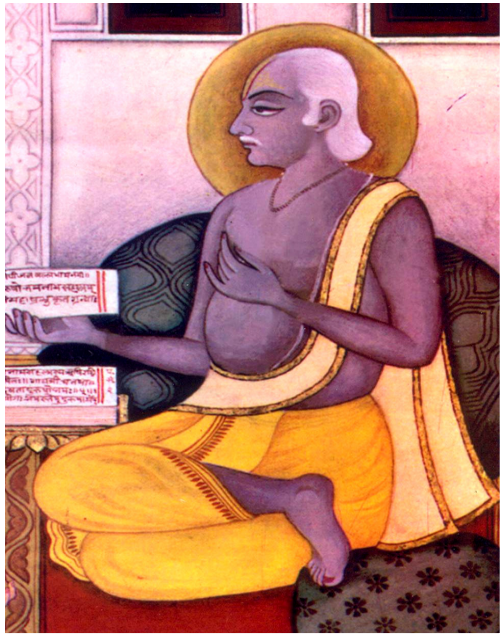

श्रीगोपीनाथजी

श्रीगुसांईजी

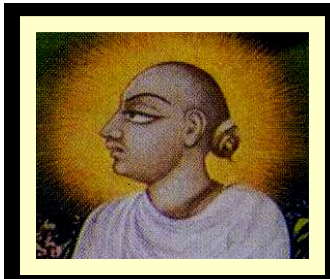

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य

प्राकट्यस्थान : चम्पारण्य–भीमारथी–
चाङ्गानगर
पिता : श्रीलक्ष्मण भट्टजी
माता : श्रीइल्लमागारुजी
भाई : श्रीरामकृष्ण (बडे)
श्रीरामचन्द्र (छोटे)
बहन : सरस्वती
सुभद्रा
पत्नी : श्रीमहालक्ष्मीजी
पुत्र : श्रीगोपीनाथजी १५६७,
भाद्रपद १२
श्रीगुसांईजी १५७२ पाष कृष्ण ९

भगवदाज्ञासे प्राकट्य

बाल्यकाल :

८ वर्षमें शास्त्राभ्यास पूर्ण

१० वें वर्ष एकं शास्त्रम्...

तीन बार भारतभ्रमण

४. दीक्षाप्रणाली

१. शरण

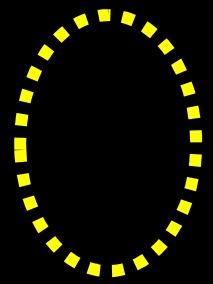

२. समर्पण

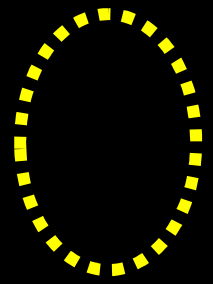

५. साधनाप्रणाली

कर्तव्य

- ☑ अनन्य आश्रय
- ☑ श्रवण–स्मरण–कीर्तन
- ☑ सेवा
- ☑ सर्वस्वका समर्पण
- ☑ समर्पितका उपभोग
- ☑ सदाचार
- ☑ स्ववर्णाश्रमधर्म
- ☑ सामान्यधर्म

निषिद्ध-त्याज्य

- ☒ अन्याश्रय
- ☒ असमर्पितभोग
- ☒ असत्संग
- ☒ वृथा बोलना
- ☒ वृथा क्रिया
- ☒ वृथा ध्यान
- ☒ वेदनिन्दा
- ☒ अधर्मका आचरण

- ☠ देवद्रव्य (कटोरीका प्रसंग)
- ☠ देवलकवृत्ति (उत्तररामचरित)
- ☠ भागवतवृत्ति (पद्मनाभदास)

तत्त्वसिद्धान्त

शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद

सबका मूल श्रीकृष्ण; सर्वोच्च तत्त्व–परब्रह्म

सृष्टि ब्रह्मात्मक–ब्रह्मरूप

सृष्टा भी वही आत्मसृष्टि भी वही

जगत् श्रीकृष्णकी लीला

श्रीकृष्ण अंशी–जीव अंश; सागर–बूंद

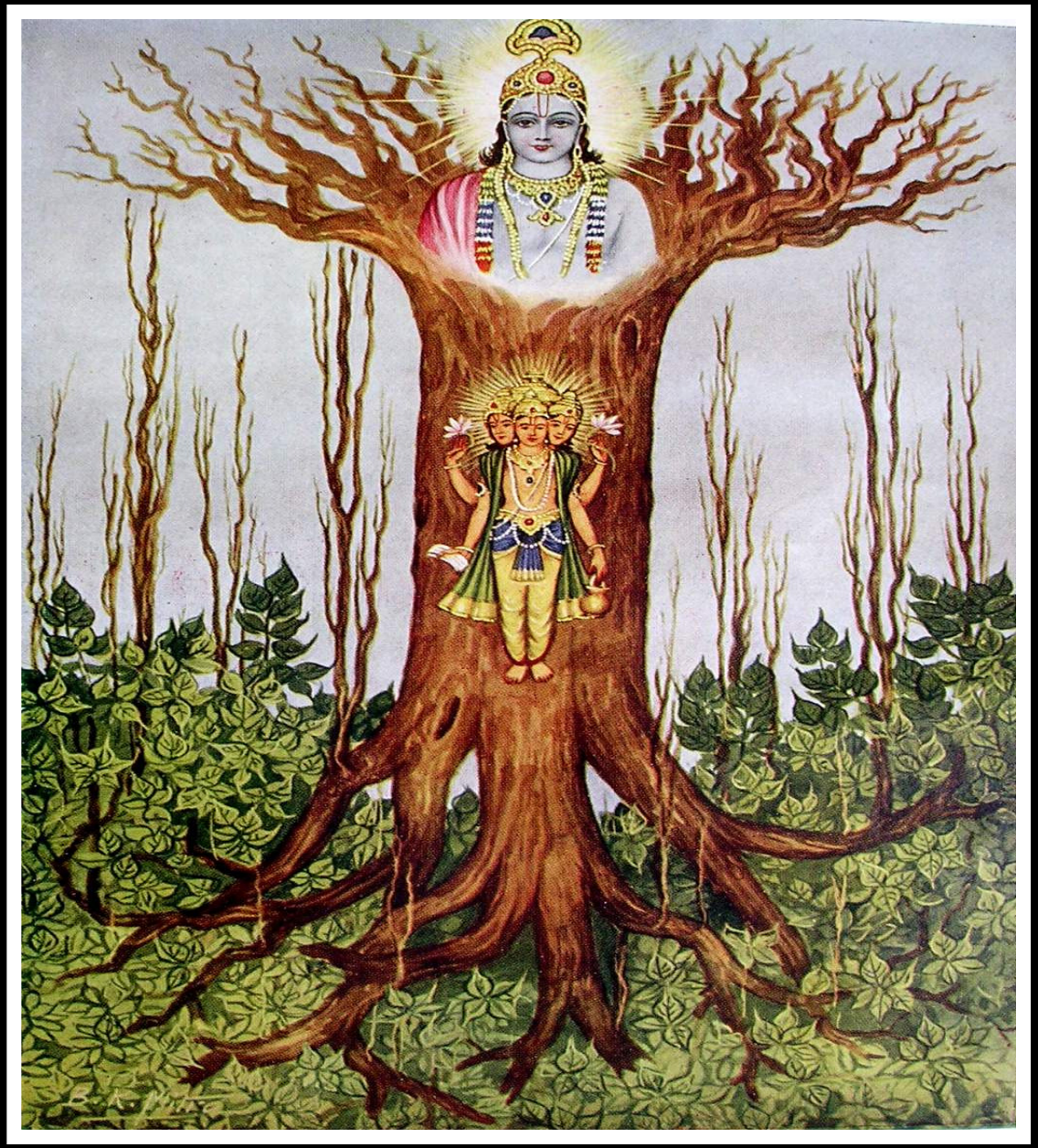

सबका मूल श्रीकृष्ण; सर्वोच्च तत्त्व–परब्रह्म

सृष्टि ब्रह्मात्मक

ब्रह्मरूप

सृष्टि ब्रह्मात्मक

ब्रह्मरूप

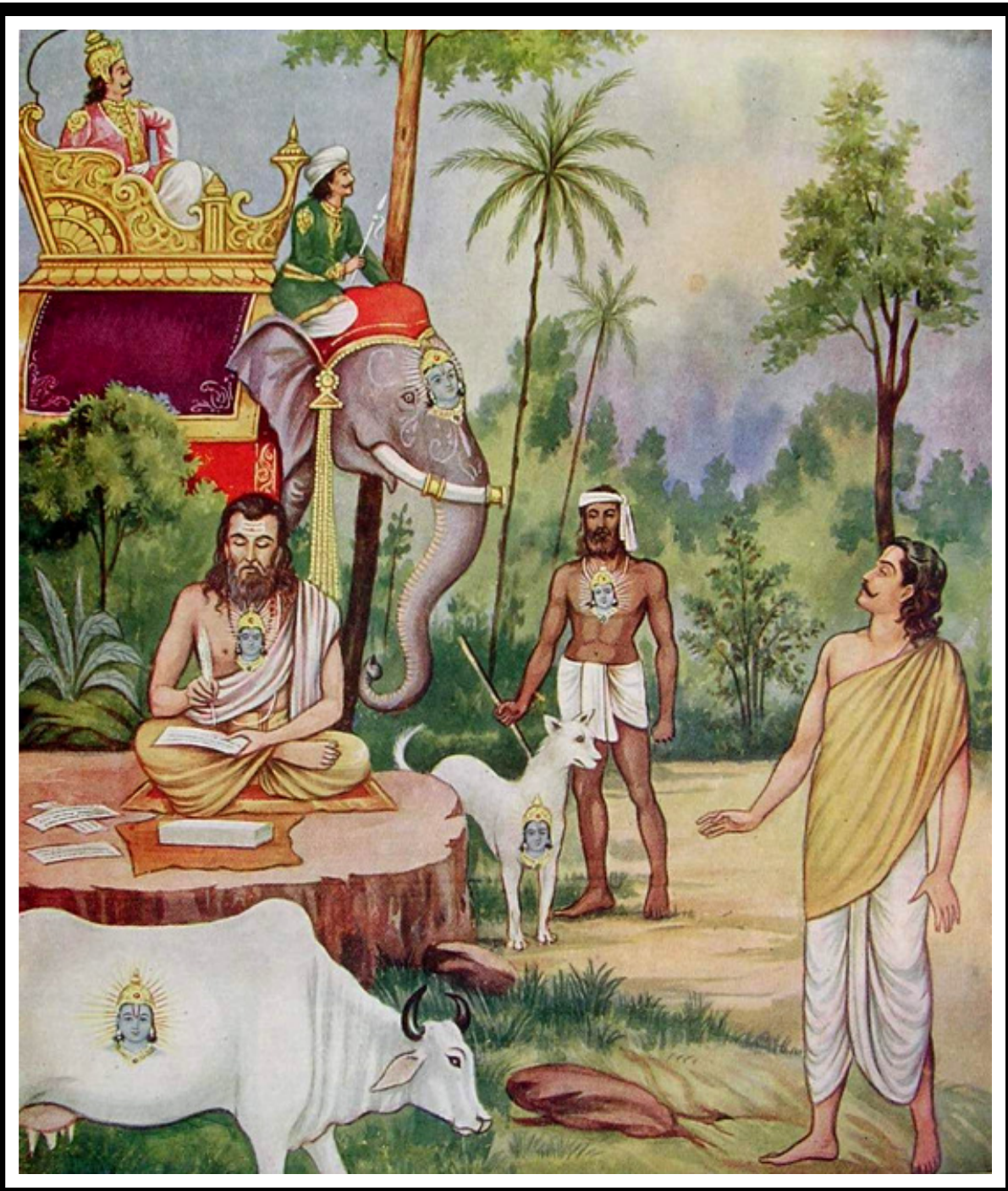

श्रीकृष्ण अंशी–जीव अंश
सागर–बूंद

धर्मसिद्धान्त

१. शरण — रक्षक–आश्रय

२. समर्पण — सुपुर्दगी

३. सेवा — सेवन; सुखजनिका क्रिया

सेवा

आत्मनिवेदन

स्वरूप = चित्तकी कृष्णप्रवणता

साधन = स्व–तनु–वित्तका विनियोग

स्वतनु = सभी इन्द्रियें

स्ववित्त = अपनी चेतन–अचेतन सभी वस्तु

भगवत्स्वरूप पधराना

श्रीपुरुषोत्तम–भावप्रतिष्ठा

सेवाका क्रम:

जगाना–मंगलभोग–आरती

स्नान–शृंगार

गोपीवल्लभभोग

पलना

राजभोग–आरती

उत्थापनभोग

संध्याभोग–आरती

शृंगार वडे करने

ग्वाल

शयनभोग–आरती

शयन

सम्प्रदायके चिह्न

देवो भूत्वा देवं यजेत्

- तिलक
- मुद्रा
- कंठी

सम्प्रदायके तीर्थ

श्रीकृष्ण सम्बन्धी:

व्रजमंडल

द्वारका

आचार्य सम्बन्धी :

बेठक

तीर्थ = पवित्र / दोषमुक्त करनेवाला; भक्तिभाव बढानेवाला

सम्प्रदायके व्रत–उपवास

जयन्ती :

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

श्रीराम नवमी

श्रीवामन द्वादशी

श्रीनृसिंह चतुर्दशी

एकादशी :

सम्प्रदायशास्त्र

श्रीवल्लभाचार्यविरचित:

- ब्रह्मसूत्राणुभाष्य
- मीमांसासूत्रभाष्य
- 'सुबोधिनी' भागवतका विवेचन
- पत्रावलम्बन
- तत्त्वार्थदीपनिबन्ध
- षोडशग्रन्थ
- शिक्षाश्लोक
- पञ्चश्लोकी

स्तोत्र :

- श्रीपुरुषोत्तमनामसहस्रम्
- श्रीमधुराष्टकम्
- श्रीकृष्णाष्टकम् इत्यादि

सम्प्रदायशास्त्र

श्रीगोपीनाथजी विरचित :

साधनदीपिका

साद्वर्यपद्य

सेवाश्लोक

सम्प्रदायशास्त्र

श्रीगुसांईजी विरचित :

- विद्वन्मण्डन
- भक्तिहंस
- भक्तिहेतुनिर्णय
- गीतातात्पर्य
- न्यासादेशविवरण
- सुबोधिनी टिप्पणी

स्त्रोत्र :

- श्रीसर्वोत्तमस्त्रोत्र
- श्रीवल्लभाष्टक
- स्फुरत्कृष्णप्रेमामृत
- यमुनाष्टपदी

विज्ञप्ति

अन्य महत्वपूर्ण प्राचीन साहित्य

व्रजभाषा :

- कीर्तन
- वार्ता
- ८४–२५२
- निज–घरु
- प्राकट्य

वचनामृत

भावना

सेवाविधि

गुजराती:

- धोल–पद